कविता

आमुख

महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

'कविता' के प्रूफ मैंने देखे। कवि गुलाब की रचनायें पहले भी सुन चुका हूँ। उन्हीं की जुबानी। उनकी तारीफ़ भी कर चुका हूँ। आज छपे आकार में देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता है। बहुत-सी रचनायें, जो कविता की कोटि में आसानी से गुलाब की तरह अपने दल खोल चुकी हैं, खुशबू से उन्मद, स्निग्ध कर देती हैं। हिन्दी का विकास विद्यार्थियों में आशानुरूप हो रहा है। गुलाब सहृदय कवि विद्यार्थी की तरह विकसित होते हुए मुझे नज़र आए, यह गुलाब के साथ हमारी भी सफलता है।

मैं तरुण कवि का हृदय से स्वागत करता हूँ और समधिक प्रफुल्ल रूप देखने को उत्सुक हूँ। इति।

--- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'